: चतुर्थ अध्याय :

हिमांशु जोशी के 'कगार की आग' उपन्यास में आँचलिकता

: चतुर्थ अध्याय :

4.'हिमांशु जोशी के 'कगार की आग' उपन्यास में आँचलिकता'

4.1 कथानक का आँचलिक आधार-क्षेत्र विशेष।

4.1.1 भौगोलिकता।

4.2 आँचलिक पात्र।

4.3 भाषा, संवाद, शैली और मुहावरों में आँचलिक स्पर्श ।

4.3.1 आँचलिक भाषा का प्रयोग।

4.3.2 कहावतें, मुहावरें, लोकोक्तियों का प्रयोग।

4.3.3 कथोपकथन।

4.3.4 प्रकृति का मानवीकरण वर्णन।

4.3.5 अपशब्दों का प्रयोग।

4.4 आँचलिक वातावरण या क्षेत्र-विशेष की पृष्ठभूमि।

4.4.1 राजनीतिक पृष्ठभूमि।

4.4.2 सामाजिक पृष्ठभूमि।

4.4.3 धार्मिक पृष्ठभूमि।

4.4.4 आर्थिक पृष्ठभूमि।

4.5 'कगार की आग' उपन्यास में लोकसंस्कृति।

4.5.1 परंपरा।

4.5.2 रीति।

4.5.3 त्यौहार।

4.5.4 मेले।

4.6 युगीन चेतना की अभिव्यक्ति।

4.7 प्राकृतिक स्थिति के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का चित्रण।

4.7.1 वर्ग तथा जाति-भावना।

4.7.2 अज्ञान / अशिक्षा समस्या।

4.7.3 अन्याय / अत्याचार।

4.7.4 स्वार्थी प्रवृत्ति।

4.7.5 व्यसनाधीनता की समस्या।

4.7.6 विवाह समस्या।

4.7.6.1 विधवा विवाह समस्या।

4.7.6.2 अनमेल विवाह ।

4.7.6.3 बहु विवाह समस्या।

4.7.6.4 दहेज समस्या।

4.7.6.5 अंतर्जातीय विवाह समस्या।

4.8 परिवार विघटन की समस्या।

निष्कर्ष

प्रस्तावना -

हिमांशु जोशी जी हिंदी के उपन्यास साहित्य में अपना एक अलग स्थान प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने हिंदी के आँचलिक उपन्यासों को एक अलग मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है। उनके दो आँचलिक उपन्यास हैं - (1) अरण्य और (2) कगार की आग। 'कगार की आग' उपन्यास के मुखपृष्ठ पर ही हिमांशु जोशी जी ने इस उपन्यास की आँचलिकता को स्पष्ट करते हुए लिखा है -

''आग की तपिश ही नहीं, इसमें हिम का दाह भी है। अनुभव की प्रामाणिकता और अनुभूति की गहनता ने इस कालत्रयी कृति को एक नया आयाम दिया है। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है शायद ! बर्फीले पर्वतीय क्षेत्र की इस कथा में एक अंचल विशेष की धरती की धड़कन है। एक जीता-जागता अहसास भी। गोमती, पिरमा, कन्नु के माध्यम से संत्रस्त मानव समाज के कई चित्र उजागर हुए हैं। इसलिए यह कुछ लोगों की कहानी, नहीं, 'सब की कहानी' बन गयी है - देश-काल की परिधि से परे।''[1]

इसी से कथा के अंचल की कुछ विशेषताएँ प्रस्तुत होती है। इस उपन्यास में अल्मोड़ा पर्वतीय अंचल के 'लधौंन' गाँव की व्यथा-कथा है। यह लुहारों-शिल्पकारों की कथा है। इसके पात्र जीविका चलाने के लिए खेती करना, गाय-बकरी पालना, बर्तन बनाना, जंगल में घूमकर अत्तर गाँजे की सेलियाँ इकठ्ठा करना और बेचना आदि काम करते हैं। इसके साथ-साथ उदरपुर्ति हेतु चोरी-चोरी शराब बेचते हैं तथा एक जगह से दूसरी जगह स्थलांतर करते हैं। इसमें नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण अधिक मात्रा में हुआ है। जैसे - वात्सल्यरूप नारी, कामकाजी नारी, पीड़ित नारी, शोषित, विवश नारी, त्यागमयी, स्त्री-पुरुष यौन संबंध, संवदेनशील, करूणामयी, भारतीय संस्कृति का पालन करनेवाली तथा स्वाभिमानी नारी चित्रित है।

4.1 कथानक का आँचलिक आधार क्षेत्र-विशेष :-

इस उपन्यास में पर्वतीय अंचल (हिमाचल प्रदेश) को केंद्र में रखा गया है। इस प्रदेश विशेष में होनेवाली लोकसंस्कृति को उन्होंने पूरी तरह से प्रस्तुत किया है। इस अंचल में होनवाले लोग, उनका जीवन, उनका व्यवसाय, उनकी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्थिति, उनकी भाषा, उनके रीति- रिवाज आदि सभी बातों को हिमांशु जोशी जी ने अंकित किया है।

4.1.1 भौगोलिकता -

भौगोलिक दृष्टि से इस गाँव का प्राकृतिक वातावरण, स्थान आदि सभी को हिमांशु जोशी जी ने अंकित किया है। इस उपन्यास में जिस पहाड़ी जन-जीवन का चित्रण किया गया है उसे लेखक ने कई बार देखा है। हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय अंचल में लधौंन के पास होनेवाली 'लोहारों की बस्ती' का अंकन हिमांशु जोशी जी ने किया है। इस गाँव के पास देवदार का बन भी है। साथ ही इसी बस्ती के किनारे-किनारे 'ज्योस्यूड़ा' नदी बहती है। वैसे तो हिमांशु जोशी जी ने आरंभ में ही स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि,

''एक गाँव की कहानी है यह। गाँव का नाम कुछ भी हो सकता है। किसी भी नाम से पात्रों को संबोधित किया जा सकता है। क्या अंतर पड़ता है इससे! यह उन अभिशप्तों की जीवन-गाथा है, जो समाज द्वारा बहिष्कृत किए गए हैं। सदा के लिए तिरस्कृत।''[2]

इस उपन्यास में वर्णित यह कथा पूरी तरह सच्ची कथा है। परंतु उनकी कथा-व्यथा-वेदनाओं को स्पष्ट रूप से लिखा है। इसी कारण हू-ब-हू वर्णन मिलता है। आज भी इस गाँव के लोग वही व्यवसाय करते हैं। आज भी वहाँ दिन-रात धौकनियाँ चला करती है और लोहे से चीजें बनाई जाती है। यह भाग पूरी तरह से उपेक्षित है जिसे हिमांशु जोशी जी ने प्रसिद्ध कर दिया है।

हिमांशु जोशी जी ने इस गाँव की प्रकृति का भी चित्रण अत्यंत सुंदर ढंग से किया हैं। बर्फीले पहाड़ों में सूरज डूबते समय होनेवाली प्रकृति की सुंदरता को वे इस तरह अंकित करते हैं -

''साँझ का सूरज मल्ली रौ के डाँडे के उस पार कहीं डूब रहा था। हलका-हलका-कुहरा सा छाया हुआ था। सामने के बर्फीले पहाड़ कुछ-कुछ पीले लग रहे थे। हल्दी के रंग के ढलते सूरज के कारण। देवदार के बनों में अभी से ठण्डा घना अँधेरा व्याप रहा था। ज्योस्यूड़ा की नदी पार कर जब गोमती अपने गाँव लधौंन पहुँची तो वहाँ अजब का आतंक छाया हुआ था।''[3]

प्रकृति का सुंदरतम् रूप होकर भी यहाँ के लोग खुश नहीं हैं क्योंकि किसी न किसी का आतंक तो इनपर छाया हुआ है ही। जब गोमती पर कलिय' का और उसका बेटा तेजुआ जबरदस्ती करने लगते हैं तो वह भाग जाती है। आत्महत्या करने के निश्चय से वह घहरती, उफनती, उमड़ती बाढ़ आयी नदी

के किनारे पहुँचकर एक छिछली चट्टान पर खड़ी हो जाती है। वहीं पर होनेवाली पनचक्की का वर्णन हिमांशु जोशी जी ने इसप्रकार किया है -

''नदी के शोरगुल के साथ पनचक्की की घर्र-घर्र आवाज आ रही थी। पानी की तेज धार से, पिनकी के सहारे ऊपरवाला पत्थर का विशाल पहिया पूरी रफ्तार से घूम रहा था। रस्सी से बँधे, ऊपर छत से टँगे काठ के बहुत बड़े घुमरैले दोनें के नीचे बर्-बर्-बर् चक्की के बीच में बने गोल छिद्र में अनाज के दानें गिर रहे थे।''[4]

पनचक्की का बड़ा ही सुंदर वर्णन यहाँ किया गया है। जब जाड़ा शुरू हो जाता है तो वहाँ की स्थिति कैसी हो जाती है, इसे भी हिमांशु जोशी जी ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से अंकित किया है -

''जाड़ा शुरू हो गया। बर्फ पड़ने के आसार स्पष्ट झलक रहे थे। ठण्डी हवा शरीर को बुरी तरह छीलने लगी थी। रात को खेतों में, खलिहानों में, पानी के नौलों में बर्फ के सफेद पारदर्शी, मोटे शीशे से काँकर जमने लगे थे। ठण्ड से ठिठुरते, अधनंगे बच्चे शीशे की तरह तोड़कर काँकर ले आते थे और माँ-बाप की निगाहें बचाकर चूसने लगते। ठण्डे घने वनों में इतना सफेद गहरा पाला पड़ने लगा था कि हिम का संदेह होने लगता। अँधियारी घाटियों में, घने बनों में नंगे पाँव चलना कठिन हो गया था। थोड़ी ही देर में हाथों-पाँवों का रंग नीला पड़ जाता और वे सुन्न होने लगते-एकदम निष्प्राण !''[5]

इस प्राकृतिक स्थिति के कारण तथा आपत्ति के कारण कई संकटों का सामना इन लोगों को करना पड़ता है।

इसप्रकार हम यह देखते हैं कि हिमांशु जोशी जी ने लर्धौन गाँव के लोहारों की बस्ती के आसपास के प्राकृतिक वातावरण को इतनी यथार्थता के साथ अंकित किया है कि वह पूरा माहौल ही सजीव रूप में आँखों के सामने प्रस्तुत हो जाता है। ऐसा लगता है कि हम इस पूरे दृश्य को देख रहे हैं, या गोमती की सारी व्यथा-कथा के हम साक्षी है। इन प्राकृतिक दृश्यों में लेखक हिमांशु जोशी जी की काव्यात्मकता भी दिखाई देती है।

4.2 आँचलिक पात्र :-

इस उपन्यास की विशेषता बताते हुए रामचंद्र तिवारी ने लिखा है - ''हिमांशु जोशी ने पहाड़ी गाँवों की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है। इनके उपन्यास 'कगार की आग' की विशेष चर्चा हुई। इसमें अल्मोड़ा जिले के 'लधौंन' गाँव की कहानी कही गई है। लेखक ने यह दिखाया है कि सरकार की सारी विकास योजनाओं के बावजूद गरीब पहाड़ियों के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। असामाजिक तत्त्व आज भी स्त्रियों की इज्जत लूटते हैं। गरीबों का शोषण करते हैं। कच्ची शराब का धंदा करते हैं। पुलिस उनका ही साथ देती है। सबसे अधिक शोचनीय स्थिति स्त्रियों की है। इसमें पात्रों की परिवर्तित स्थिति का वर्णन किया है। उपन्यास के केंद्रिय पात्र गोमती की विवशता सारी स्त्रियों की विवशता है। कलिय, खुशालराम, तिरपनलाल सभी उसके रूप के प्यासे हैं। अंत में कलिय उसके पति पिरमा की हत्या कर देता है। गोमती कालभैरवी बनकर रात में उसको भी जला देती है और अपने बच्चे को लेकर अँधियारे में गुम हो जाती है। अभी भी पहाड़ी गाँव रात के अंधेरे में ही जी रहे हैं।''[6]

यही बात हिमांशु जोशी जी ने भी आरंभ में ही स्वीकार की है। उन्होंने यह भी कहा है कि यह किसी भी गाँव की कहानी हो सकती है और यह एक सच्ची कहानी है जिसे थोड़ा परिवर्तन कर उन्होंने प्रस्तुत किया है। इसी कारण यह उपन्यास पूरी तरह से आँचलिक बन गया है जिसमें होनेवाले लगभग सभी पात्र चरित्र चित्रण विधि में नवीनता लाते हैं। पात्रों के माध्यम से मानवीय भावनाओं का सुंदर चित्रण किया है। इस उपन्यास में विभिन्न पात्र मिलते हैं, जैसे -

(1) नायक - पिरमा।

(2) नायिका - कावेरी।

(3) खलनायक - कलिय और तेजुआ।

(4) सच्चाई का साथ देनेवाला - खिमुराम ।

(5) सामाजिक कुप्रथाओं के विरूद्ध विद्रोह करनेवाले - खिमुराम, गोमती और देवराम।

(6) संतान के लिए बहुविवाह करनेवाला - खुशाल आदि पात्रों के साथ-साथ गोमती की माँ, गुदलि, ककिया सास, धरी, हरलि, सुदलि, खुशाल की दो पत्नियाँ, परलि, खिमली आदि स्त्री पात्र और कन्नु, धरमराय पंच, चौकीदार पतरौल, घोड़िया डॉक्टर, हरकिसन पधान, लालू हलवाई, हरपतिया, पटवारी, प्रेमराव, हरराम, रमियाँ, किशनसिंह थोकदार, नंदलाल सुतार, बुधानंद पण्डत, चिंता, बैनीराम आदि पुरुष पात्र मिलते हैं।

आँचलिक उपन्यास होने के कारण इसमें पात्रों की भरमार हैं। इसी कारण इसमें एक दूसरे का द्वेष करनेवाले, स्वार्थी, नामर्दानगी, मजदूरी करनेवाले और विशिष्ट जाति के पात्रों का विवेचन मिलता है। ये सभी पात्र अपनी-अपनी भूमिका को सही रूप में निभाते हैं जिससे वे उस अंचल विशेष के प्रतिनिधि बनकर ही प्रस्तुत हो जाते हैं।

4.3 भाषा, संवाद, शैली और मुहावरों में आँचलिक स्पर्श :-

भाषा आँचलिक उपन्यासों का प्राण होती है। इसी भाषा के बल पर ही लेखक उस उपन्यास के कथानक को उस प्रदेश विशेष में या उस अंचल में ले जा सकता है। हिमांशु जोशी जी की भाषा में पाए जानेवाले सभी गुण अर्थात् सहजता, सुगमता, सुंदरता, सरसता, भावपूर्णता, नाद्यपूर्णता आदि तो पाए जाते ही हैं परंतु आँचलिकता की दृष्टि से कुछ भाषागत विशेषताएँ भी दिखाई देती है। समय-समय पर उचित परिवर्तन हिमांशु जोशी जी की भाषा का वैशिष्टय है। इसमें उन्होंने स्थानीय बोली का अधिक मात्रा में प्रयोग किया है। शब्दचयन का विशेष गठन मिलता है जिसमें दुर्बोधता नहीं मिलती। आँचलिक दृष्टि से 'कगार की आग' इस उपन्यास में भाषा की दृष्टि से निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती है।

4.3.1 आँचलिक भाषा का प्रयोग -

उपन्यास में भाषा-शैली का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आवश्यकतानुसार उपन्यास की भाषा का रूप परिवर्तित होता है। कहीं-कहीं भावमयी प्रयोग के साथ-साथ प्रवाहमान तथा सरिता की धारा के समान होती है। जोशी जी ने अपने इस उपन्यास में अनेकानेक आँचलिक शब्दों का प्रयोग किया हैं, जैसे - (1) आँचलिक शब्द - किरिया, जान्ती, सम्झी, खुपसुरत, मिहनत, गिराम, जिनावर, बोल्ना, इनसाफ, दुसमनी, मूरख, बित्तेभर, ऐस्से, बौत, मुसु, परबरस, फैदा, भव्वा, लछमी, रूपै, उन्को, जमदूत, इत्ता, करजा, ठैर,

ल्वार, भरस्ट आदि।

(2) 'कर' प्रत्यय लगाकर आए शब्द - डर डरकर, रूक-रूककर, उठ-उठकर, सँभल-सँभलकर, बच-बचकर, कट-कटकर, हिला-हिलाकर, चुरा-चुराकर, बाँध-बाँधकर, रह-रहकर, उझाक-उझककर, झुलस-झुलसकर, सुबक-सुबककर आदि।

(3) जुड़े शब्द - धरम-करम, टूटे-फूटे, देख-रेख, काम-काज, इलाज-विलाज, दवाई-पताई, मिठाई-सिठाई, भाँडे-बरतन, कपड़े-लत्ते, समझा-बुझा, रहा-सहा, पास-पड़ोस, दुबले-पतले, रूखा-सूखा, जूठा-पीठा, दनकता-फनकता आदि।

(4) द्विरूक्ति शब्द - हलका-हलका, कुछ-कुछ, छोटी-छोटी, फुँऊँ-फुँऊँ, तिनका-तिनका, जगह-जगह, तरह-तरह, खि:-खि:, आते-आते, थुर-थुर, सहमते-सहमते, पटर-पटर, सच-सच, लौटते-लौटते, साथ-साथ, कौन-कौन आदि। इस प्रकार जोशी जी ने आँचलिक भाषा का अधिक मात्रा में प्रयोग किया हैं।

4.3.2 कहावतें, मुहावरें, लोकोक्तियों का प्रयोग -

भाषा को सजीव और प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरें, कहावतें, और लोकोक्तियों का प्रयोग नए अर्थबोध के साथ किया गया मिलता है। जोशी जी ने लधौंन गाँव के आस पास पाए जानेवाली कहावतें, मुहावरें, लोकोक्ति का प्रयोग भी इस उपन्यास में भाषा सौंदर्य बढ़ाने के लिए किया है। जैसे - एक कौवे के नौ कौवे बनाना, जितने मुँह उतनी बातें, नौ घर का जूठन खाना, मरते समय पानी गेरनेवाला भी न होना, पैचा माँगना, हाड़-ही-हाड़ रहना, खून का घूँट पीना, खून पी जाना, जौ हाथ करना, पसीना-पसीना होना, नाक कटाना आदिओं का प्रयोग मिलता है।

4.3.3 कथोपकथन -

कथोपकथन या संक्षिप्त संवाद कथानक में रोचकता लाते हैं। अगर कथानक में छोटे-छोटे संवाद न मिलते हो तो वह निबंधवत् माना जाएगा। इसी कारण कथावस्तु में कथोपकथन या संक्षिप्त संवादों का होना आवश्यक है जिससे वर्णनात्मक का खण्डन किया जाता है। जोशी जी ने 'कगार की आग' उपन्यास में इसका उपयोग किया है। उपन्यास की नायिका गोमती मायके से पुन: ससुराल आती है तब अपने बेटे कमु

की पूछताछ करती है। उससे पूछती है -

"कल खाना नहीं बनाया उन्होंने?"

"न्ना।"

"आज भी नहीं - "

"न्ना।"

"तो तूने क्या खाया?"

"हरलि'दी ने एक तुमड़िया ककड़ी दी थी।"

"बस्स, दो दिन से उसी पर है रे...!"[7]

इस उपन्यास में चित्रित भूखमरी समस्या का यह एक अत्यंत सुंदर उदाहरण है। इसके साथ-साथ जब गोमती को कत्रु और पिरमा की याद सताती है तो वह उदास रहती है। खुशाल उसं उदासी का कारण पूछता है -

"तू उदास-उदास क्यों रहती है.....?" एक दिन खुशाल ने पूछा तो गोमती कोई उत्तर न दे सकी।

"यहाँ तुझे कोई दुख-तकलीफ?"

"न्नाँ।"

"मँझली और बड़ी कुछ कहती हैं?"

"न्नाँ।"

"तो मुझसे कोई शिकायत?"

"यह कैसे समझ लिया तुमने?"[8]

उपर्युक्त संवाद से खुशाल की दो पत्नियाँ होने की बात सामने आती है। यह उपन्यास में चित्रित बहुविवाह समस्याओं को उजागर करने का एक उदाहरण है। इस प्रकार जोशी जी ने संक्षिप्त संवादों या कथोपकथन द्वारा पात्रों के चरित्र चित्रण में बड़ा ही सहयोग दिया हैं।

4.3.4 प्रकृति का मानवीकरण वर्णन -

जोशी जी ने उपन्यास की सफलता के लिए प्रकृति के मानवीकरण का वर्णन किया है। जिससे उपन्यास की सफलता को बढ़ावा मिलता है। गोमती अपने देवर देवराम से कलिया और तेजुआ को समझाती है। देवराम उन्हें गोलियों से उड़ा देने की धमकी देता है। साथ-ही-साथ गाँव के सरपंच, थोकदार पटवारी आदि को अपने बड़े भाई पिरमा की ओर ध्यान देने के लिए कहता है। वह वहाँ रहना चाहता है लेकिन पलटन में होने के कारण उसे युद्ध के लिए बुलाया जाता है और उसमें वह शहीद होता है। गोमती का टूटा-फूटा सहारा भी निकल जाता है जिसका वर्णन करते समय जोशी जी लिखते हैं -

"कोरे आकाश से ब्रज बरस पड़ा"[9]

इस प्रकार प्रकृति का मानवीकरण का वर्णन करने में लेखक सफल हुए दिखाई देते है।

4.3.5 अपशब्दों का प्रयोग -

इस उपन्यास में अपशब्दों का प्रयोग सीमित मात्रा में हुआ है। जैसे -जानिजौंसि रौंड, नौहाल, साला, रण्डी, निरलज्ज, पगला, जारजात, बेशरम, कुतिया की बच्ची, हरामजादी आदि।

इसी प्रकार पात्रों की स्वभाव विशेषताओं के आधार पर पात्रों की भाषा परिवर्तित हो जाती है। पढ़े-लिखे लोगों की भाषा में अंग्रेजी शब्द और अनपढ़ लोगों की भाषा में उन्हीं शब्दों का विकृत रूप दिखाई देता है।

इस प्रकार हम यह पाते हैं कि भाषा के स्थानीय रूप को हिमांशु जोशी जी ने अत्यंत सुंदर रूप से प्रस्तुत किया है। पूरे उपन्यास में बहुत लंबे संवादों का प्रयोग किया ही नहीं गया है। आँचलिक शब्दों

की भरमार होते हुए भी भाषा को अत्यंत सीधे-सादे रूप में प्रस्तुत किए जाने के कारण वह जल्दी समझ में आ जाती है। इसी कारण आँचलिक होते हुए भी यह उपन्यास पठनीय हो गया है।

4.4 आँचलिक वातावरण या क्षेत्र-विशेष की पृष्ठभूमि :-

जिस प्रकार हिमांशु जोशी जी ने इस प्रदेश के प्राकृतिक वातावरण को अंकित किया है, उसी प्रकार इस प्रदेश-विशेष की पृष्ठभूमि को भी अनेकानेक रूपों में अंकित किया है। उनके द्वारा अंकित पृष्ठभूमि को हम निम्नलिखित विभागों में विभाजीत कर सकते हैं -

4.4.1 राजनीतिक पृष्ठभूमि -

वैसे तो राजनीति का गहरा संबंध भ्रष्ट आचरण से माना जाता है लेकिन हिमांशु जोशी जी ने भ्रष्टाचार का अंकन यथार्थ रूप में करते हुए भी राजनीतिक वातावरण को या राजनीतिक पृष्ठभूमि को अंकित नहीं किया है। सिर्फ पंचायत में होनेवाले न्याय के आधार पर राजनीतिक पृष्ठभूमि को समझा जा सकता है।

जब बिना गलती किए पिरमा को तेजुआ के बदले चोरी के इल्जाम में पकड़कर ले जाते हैं तो खिमुराम उसका विरोध करना चाहते हैं लेकिन पूरी पंचायत के लोग मिलकर खिमुराम को समझाते हैं कि पिरमा बैठा रहता है और वह वहाँ जाकर बैठेगा तो आप का क्या बिगड़ेगा? इसी कारण बिचारे पिरमा को जबरदस्ती जेल में बैठना तो पड़ता ही है और उसे छुड़वाने के लिए गोमती को अपने देह की बली देनी पड़ती है, बलात्कार को सहना पड़ता है।

जब गोमती खुशाल के घर रहने लगती है तो कलिय'का इस बात का विरोध करते हैं और पाँच पँचों के बीच धड़ी भरने की रकम चार सौं रूपए लेकर आते हैं लेकिन वह पैसे पिरमा को नहीं मिल पाते। जब अंत में पिरमा की हत्या कर दी जाती है तो उसे भी पंचायत के लोग दबा जाते है। पिरमा जंगलों में गाय-डगरों को लेकर चला जाता है। वहाँ से लौटते समय कलिय'का के बैल का पाँव खड्डे में गिर जाने के कारण टूट जाता है। कलिय' गुस्से से दौड़ता हुआ आता है और अंधेरे में पिरमा के सिर पर जोर से लाठी मारता है तो पिरमा वहीं चित हो जाता है। पानी भी नहीं माँग सका। उसे जलाकर आत्महत्या दिखाने का वर्णन हिमांशु जोशी ने इस प्रकार किया है -

''आधी रात तक गाँव के बुजुर्ग-बूढ़ों को अपने घर में घेरकर पंचायत बैठाता रहा। पुलिस-पटवारी का भय था। आदमी की हत्या के मामले में सारा गाँव उजड़ जाता, इसलिए पिरमा की लाश चुपके से घर में बाँधकर उस पर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा दी। उसने कह दिया कि झोपड़ी में आग लगने के कारण जलकर मर गया बेचारा।''[10]

इस प्रकार पंचायत के कारण ही उसकी हत्या भी छिप जाती है। अर्थात् हम यह पाते हैं कि गाँवों में राजनीति सीधे पंचायत से ही ताल्लुख रखती है। पंचायत में जो भी निर्णय लिया जाता है वह सभी को मान लेना पड़ता है। यहीं गाँवों की वास्तविकता हिमांशु जोशी जी ने अंकित की है, लेकिन अन्य कहीं भी राजनीतिक माहौल को जोशी जी ने अंकित नहीं किया है। अत:हम यह कह सकते हैं कि जोशी जी यहाँ थोड़े से कम पड़ गए हैं।

4.4.2 सामाजिक पृष्ठभूमि -

इस उपन्यास में जोशी जी ने व्यक्ति की अपेक्षा समाज के बिखराव को ज्यादह महत्त्व दिया है। किसी एक व्यक्ति को न लेकर कथानक के बिखराव के कारण सभी पात्र अपना-अपना स्थान बनाए रखे हैं। हर एक पात्र को लेकर कथावस्तु उनके इर्द-गिर्द घूमती रही है। इसी कारण इसमें सामूहिक जन-जीवन का चित्रण मिलता है। लधौंन में समाज बिखरा हुआ है लेकिन उनकी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक समस्याएँ एक ही है। सामान्य तौर पर देखें तो अनेकों से बना समाज होता है इसी कारण इसमें व्यक्तिगत समस्याओं का चित्रण न मिलकर सभी समाज की समस्याओं का चित्रण मिलता है। आँचलिक उपन्यासों में सामाजिक परिस्थितियों का अंकन होता है जो उपन्यास की सफलता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भी होता है।

हिमांशु जोशी जी ने अपने 'कगार की आग' उपन्यास की सामाजिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत समाज में पाए जानेवाले वर्ग तथा जातिभावना, समाज में पाये जानेवाले पर्व-उत्सव-त्यौहार, समस्याएँ आदि को अंकित किया है। इनका विवेचन विस्तृत रूप से आगे चलकर देखेंगे -

4.4.3 धार्मिक पृष्ठभूमि -

कहा जाता है कि धर्म मनुष्य की सद्सद्विवेक बुद्धि को नियंत्रित करता है। परंतु आधुनिक काल में शिक्षा के इतने प्रचार और प्रसार के बावजूद भी लोग अंधश्रद्धा से युक्त हैं। इसी अंधश्रद्धा के अनेकानेक रूपों को हिमांशु जोशी जी ने अंकित किया है।

जब गोमती की माँ गोमती को अकेले आने के कारण वापस ससुराल भेजने चली जाती है तो रास्ते में पागल पति पिरमा का इलाज करने की सलाह माँ उसे देती है। उससे वह कहती है कि पिरमा को किसी डँगरिया को दिखाकर झाड-फूँक करवा लेना। अर्थात् गाँजा पिलाकर पागल बनाए गए उसके पति पिरमा का इलाज ओझा करवा देगा ऐसा वे सोचते हैं। जब कोई किसी पर अन्याय करता है तो उसे ब्रह्महत्या का ड़र दिखाया जाता है। जब खिमु का कलिय को धमकाते हैं, तो वे उसे हत्यारे संबोधित करते हुए कहते हैं कि तुम हत्यारे हो, तुम्हें ब्रह्महत्या का पाप लगेगा क्योंकि उसी ने पिरमा को बचपन में सिर पर पत्थर मारा था जिसके कारण उसकी यह दशा ऐसी होती है।

जब खुशाल लोहार के घर में रहते समय गोमती को अपने बच्चे की याद आती है तो खुशाल उसे समझाता है कि सिद्धनाथ बाबा की कृपा हो गई तो तुम्हारी गोद जल्दी भर जाएगी। अर्थात् यहाँ भी उसका अंधविश्वास दिखाई देता है।

जब गोमती लाला तिरपनलाल के यहाँ काम करती है तो वहाँ वह सपने देखती हैं कि पिरमा के दस्से के मेले में से गौतोड़ा ले जाएगी। डँगरिया देवता वहाँ नाचते हैं। उनकी सौंली लग गई तो वह पहले की तरह काम करने लगा। अर्थात् यहाँ भी उसका अंधविश्वास दिखाई देता है।

पूरे उपन्यास में ईश्वर के प्रति सिर्फ विश्वास नहीं प्रकट होता; चाहे वे बार-बार ब्यानधूराँ की कसम खाते हो, बल्कि अंधविश्वास भी कई स्थानों पर प्रकट हो जाता है जिससे उनका अंधविश्वास स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाता है। आज भी वहाँ के लोग गोमती के भूत को मानते हैं और रात के वक्त कोई छाया दिखाई दे तो दरवाजें लगा लेते हैं।

4.4.4 आर्थिक पृष्ठभूमि -

आर्थिक पृष्ठभूमि में गाँव की आर्थिक दशा का अंकन दिखाई देता है। हिमांशु जोशी जी ने लोहारों की बस्ती जिस का अंकन किया है वहाँ तो पूरी तरह से अर्थाभाव दिखाई देता है। वहाँ के कुछ लोगों की स्थिति इतनी दयनीय है कि जब घर में कोई मेहमान आ जाए तो उन्हें पैचा माँगकर (उधार) आटा लाना पड़ता है। जब गोमती अपनी माँ के पास चली जाती है तो उसकी माँ पैचा माँगकर आटा ले आती है और जब उसके घर में देवर देवराम आ जाता है तो वह स्वयं भी खिमु'का के घर से पैचा माँगकर आटा ले आती है जिसे दूसरे दिन काम करके चुका देना होता है।

गोमती की माँ को बहुत देर से पता चलता है कि उसके दो-चार खेत हरकिसान पधान ने गोमती के पिता के जीते-जी ही अपने नाम कर लिए हैं। जीवन-भर ब्याज के रूप में बरतन ले जाते रहे और पिता को हलिया बना दिया। मुफ्त में खेत जुतवाये और अब उसे देने से वह इन्कार कर रहा है। अर्थात् यहाँ आर्थिक शोषण दिखाई देता है।

गोमती के पास अपने शरीर को पूरी तरह से ढ़कने के लिए कपड़े भी नहीं हैं। खेत में काम करते वक्त, पेड़ पर चढ़ते वक्त उसे बहुत सावधानी से काम लेना पड़ता है। वह सुंदर होने के कारण उस पर सभी की नजर है। घघरी का जाल हो गया है। अंगडी का झीना अस्तर मात्र शेष रहा है। इतनी दर्दनाक स्थिति उसकी हो गई है। उसका देवर यही सब देखने के पश्चात् तो दूसरी शादी के लिए तैयार नहीं होता। यहाँ तक कि जब उसे अपने देवर को लाम पर चिठ्ठी भेजनी होती है तो उसके लिए भी उसके पास पैसे नहीं होते। वह थोकदार को लोहे की कटोरी दे देती है और उसे बेचकर पैसे लेने की बात उसे कहती है। जब वह खुशाल के घर रहने लगती है तो पैसे के लिए ही कलिय'का खुशाल के घर चला जाता है और चार सौं रूपए घड़ी भरने के ले आता है। जब गोमती लाला तिरपनलाल के यहाँ काम करती है तो खुशाल की घड़ी भरने की रकम चुकाने के लिए अनेकानेक प्रकार के अत्याचारों को सहती है।

आर्थिक विपन्नता चाहे इन गाँव के लोगों की विवशता रही हो, फिर भी ऐसे भी कुछ लोग है जो मेहनत कर स्वाभिमान के साथ रहना चाहते तो हैं लेकिन उनका भी शोषण, जमींदार, साहुकार, पटवारी, पेशकार आदि लोग करते हैं। यहाँ तक की एक ही परिवार में भी साहुकारी चलती रहती है। इसी कारण इन लोगों की आर्थिक समस्याएँ बढ़ती ही चली जाती हैं।

4.5 'कगार की आग' उपन्यास में लोकसंस्कृति :-

लोकजीवन की आत्मा लोकसंस्कृति है। जिसके अंतर्गत लोकगीत, लोकनृत्य, लोकसंस्कृति आदि आते हैं। हिमांशु जोशी जी ने इन लोगों की लोकसंस्कृति को पूरी तरह खोलकर हमारे सामने इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि पूरा लोकजीवन किसी चलचित्र के समान हमारे सामने प्रस्तुत हो जाता है। इस उपन्यास में हिमांशु जोशी जी ने यहाँ होनेवाले देवधूरा के, हरेला के, ब्यानधूरा के मेलों का वर्णन तो किया है लेकिन उनका संबंध नायिका के चरित्रांकन के लिए किया है तथा कभी सिर्फ यादों के रूप में किया है, जहाँ सिर्फ उनका उल्लेखमात्र है। गोमती को याद आता है कि देवधूरे के मेले में उसकी सहेली धरी और वह एक साथ गई थी। सारी रात उन्होंने झोंटे गाये और हुड़के की ताल पर थिरकती रही थी। हवा में उड़ती रही थी। जब खुशाल के साथ गोमती 'फूलडोल' के मेले में चली जाती है वहाँ अपने वैभव प्रदर्शन के लिए वह उसे जबरदस्ती गहने पहनाता है लेकिन फिर भी वह नीरस बनी रहती है। वहाँ उसे अपने पति और बेटे कन्नु का पता चलता है। अर्थात् यह मेला एक माध्यम बनकर आया है लेकिन हिमांशु जोशी जी ने उन लोगों के रीति-रिवाज आदि का अंकन किया है।

4.5.1 परंपरा -

इस उपन्यास के अंतर्गत परंपरा से चलती आई पद्धति को दर्शाया है। बालविवाह की परंपरा का पालन गोमती की माँ, गोमती, पिरमा आदि के माध्यम से दिखाई देती है तो संतान प्राप्ति हेतु बहुविवाह करने की परंपरा को खुशाल के माध्यम से दिखाया है। अंधविश्वास के कारण धार्मिक परंपरा का जतन सभी पात्रों के माध्यम से दिखाई देता है। गोमती की माँ गोमती को समझाती है कि पति का घर छोड़कर मायके बिना बुलाये कभी नहीं आते। इसी कारण वह उसे छोड़ने जाती है। इसका मतलब है, पति परमेश्वर मानने की परंपरा को जोशी जी दर्शाना चाहते हैं। इस प्रकार इस उपन्यास में परंपराप्रिय समाज का वर्णन मिलता है।

4.5.2 रीति -

इस उपन्यास के पात्र जब मेले में जाते हैं तो वापस लौटते समय अपने छोटे बच्चों को पिपरी, सिटी, कपड़ा लाना नहीं भूलते। यह वहाँ की रीति है। सौंते एक दूसरे का द्वेष करती हैं। इसी रीति

को भी चित्रित किया है। गाँव में अगर दंगा-फसाद , झगड़े, अन्याय, अत्याचार हो तो गुनाह करनेवाले व्यक्ति को सजा दी जाती है जिसका निर्णय गाँव के पंच-सरपंच करते हैं। उन्होंने दिए निर्णय सभी को पालने पड़ते हैं। इसी प्रकार रीति वर्णन में भी जोशी जी सफल रहे हैं।

4.5.3 त्यौहार -

जोशी जी ने त्यौहारों का वर्णन कम मात्रा में किया है। विभिन्न परंपरा से चलते आए त्यौहारों को दर्शाना आवश्यक होता है लेकिन उसका पालन जोशी जी ने नहीं किया है। मेले, पर्व, परंपरा, त्यौहार इन सभी को मिलाकर वहाँ की संस्कृति को दर्शाने का प्रयास किया है।

4.5.4 मेले -

समाज के साथ समाज में होनेवाले पर्व, उत्सव, त्यौहार जुड़े रहते हैं। समाज में पाए जानेवाले उत्सव, त्यौहार, मेले उस प्रदेश के सांस्कृतिक जीवन को प्रस्तुत करते हैं। वहाँ के लोगों की खुशियाँ उसके साथ जुड़ी रहती हैं। इसी कारण इस गाँव के त्यौहार मेलों का वर्णन हिमांशु जोशी जी ने किया हैं।

गाँव का मेला गाँव के लोगों को सबसे अधिक खुश करनेवाली चीज होती है। हिमांशु जोशी जी ने इस गाँव से संबंधित चार मेलों का वर्णन किया है - देवधूरा का मेला, फूलडोल का मेला, हरेला का मेला और ब्यानधूरा का मेला। इन मेलों में जाने के लिए लोग अपने दुखों को भूल जाते हैं। साथ ही इन मेलों के साथ उनकी धार्मिक भावना भी जुड़ी रहती है। इस उपन्यास की नायिका गोमती और ठुल'का की लड़की धरी कभी सच्ची सहेलियाँ थी। देवधूरे के मेले में वे दोनों साथ-साथ जाती थी। सारी-सारी रात उन्होंने झोंटे गाए थे; हुड़के की ताल पर थिरकती रही थी। उन्हें ऐसा लगता था कि मानो वे हवा में उड़ रही हैं लेकिन वे दिन जब गोमती को याद आते हैं तब उसे दु:ख होता है क्योंकि अब वह खुशी उसके नसीब नहीं होती।

जब गोमती खुशाल के घर रहने लगती है तो लोहाघाट में रिखेश्वर के पास फूलड़ोल का मेला होता है। उस मेले में गोमती चली जाती है लेकिन वह खुशाल के आग्रह के कारण चली जाती है। उसे वहाँ अपने पति को जेल में डाले जाने की खबर मिलती है। साथ ही वह अपने बेटे को मिठाई, सिटी, पिपरी भी भेज देती है। अर्थात् इस मेले के जरिए उसे अपने पति और बेटे के बारे में जानकारी मिलती है। इसी के साथ खुशाल के घर में होनेवाले समारोह का भी वर्णन किया गया है लेकिन वह किस बात के लिए है इस बात

को अंकित नहीं किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिमांशु जोशी जी ने इस पर्वतीय अंचल के महत्त्वपूर्ण हिस्से, त्यौहार, पर्व, मेले आदि का अंकन अत्यंत यथार्थ रूप से किया है। इन मेलों का, लोगों के जीवन के साथ गहरा संबंध किस प्रकार होता है इसे भी उन्होंने अंकित किया है।

4.6 युगीन चेतना की अभिव्यक्ति :-

अपने युग से प्रभावित अन्य अनेक साहित्यकारों की तरह हिमांशु जोशी भी हैं परंतु उन्होंने अपने 'कगार की आग' उपन्यास में युगीन चेतना को अधिक मात्रा में अभिव्यक्ति नहीं दी है। इस उपन्यास के कथानक का समय निश्चित करने के लिए पूरे उपन्यास की सिर्फ एक ही घटना को आधार बनाया जा सकता है। गोमती का देवर देवराम युद्धक्षेत्र से छुट्टी के लिए आता है। देश पर विदेशी आक्रमण का खतरा बढ़ जाने के कारण उसे छुट्टी से वापस बुलाया जाता है। उसके चले जाने के कुछ दिन पश्चात् ही पिरमा के नाम सरकारी चिट्ठी आती है कि कमाऊ रेजिमेण्ट का सिपाही देवराम पाकिस्तान के मोर्चे पर शहीद हो गया। इसका मतलब है कि, पाकिस्तान के साथ भारत का युद्ध जब हो गया था तब की यह स्थिति है। उस वक्त के वातावरण का अंकन इस उपन्यास में हुआ है। उस वक्त तक इस पूरे गाँव में अज्ञान का अंधकार फैल गया था और वर्दी का डर, साहूकारों द्वारा शोषण आदि विशेषताएँ इस गाँव की थी। उस समय का अत्यंत यथार्थ रूप से वर्णन हिमांशु जोशी जी ने किया है।

4.7 प्राकृतिक स्थिति के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का चित्रण :-

समाज जीवन के विकास के परिणाम स्वरूप सामाजिक समस्याएँ मानवी विकास में बाधा पहुँचा रही हैं। उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझा जाता है। मानव चरित्र पर प्रकाश डालकर उसके रहस्यों को खोलना उपन्यास का प्रमुख तत्त्व है। इसी कारण समाज में घटित घटनाओं के साथ-साथ विभिन्न समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करना उपन्यासकार का मूल कर्तव्य है। हिमांशु जोशी जी ने अपने 'कगार की आग' उपन्यास की सामाजिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत समाज में पाए जानेवाले वर्ग तथा जाति-भावना, समस्याएँ आदि को अंकित किया है।

सामाजिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा उसकी समस्याएँ होती हैं। इन समस्याओं में समाज के लोगों की वृत्तियाँ तो दिखाई देती ही हैं, साथ ही प्रदेश-विशेष की विशेषताएँ भी साफ दृष्टिगोचर हो जाती हैं। 'कगार की आग' में हिमांशु जोशी जी ने इन पहाड़ी लोगों को सतानेवाली कई सामाजिक समस्याओं को अंकित किया है। समस्याओं को निम्नलिखित विभागों में विभाजित किया जा सकता है।

4.7.1 वर्ग तथा जाति-भावना -

आधुनिक काल में समाज में तीन वर्ग पाए जाते हैं। इनमें से इस उपन्यास में सिर्फ दो वर्गों का वर्णन किया गया है - एक निम्नवर्ग और मध्यवर्ग। इन वर्गों की स्थिति का यथार्थ अंकन किया गया है। जब खुशालराम गोमती को अपने घर रखैल के रूप में बिठाने के लिए ले आता है तो उसे धड़ी भरने के लिए चार सौ रूपए देने पड़ते है। तब गोमती उसे पूछती है कि इतना कर्जा वह कैसे चुकाएगा? अर्थात् वह निम्नवर्ग की है। इतने रूपए किसी के पास हो सकते हैं, इस बात पर उसका विश्वास ही नहीं है। खुशाल की भी अभी-अभी स्थिति सुधर गई है और उतने रूपए उसके पास होते हैं। जाति-भावना भी इनमें काफी घर कर चुकी है। जब गोमती कलिय'का के ड़र से भागकर खुशाल के पास आती है तो वह उसे अपने साथ चलने की सलाह देता है। वह कहता है -

''मरने से क्या होगा? मेरे घर चल। मैं रख लूँगा तुझे ! तेरी ही जात-बिरादरी का हूँ - सोर का। अब नरसिंह डाँडा के 'पलौट' में बस गया हूँ।''[11]

अर्थात् यहाँ भी जात-बिरादरी को पहले देखा जाता है। चाहे किसी के साथ शादी हो जाने के बाद किसी कारणवश वह दूसरे व्यक्ति के साथ रहने लगे तो वहाँ भी जात-बिरादरी महत्त्वपूर्ण हो जाती है और पंचायत अगर इजाजत दें तो ही उसे वह व्यक्ति रख सकता है। चाहे जितना छोटा मानव-समाज क्यों न हो, फिर भी उसे जाति बिरादरी का खयाल रखना पड़ता है। गाँव में अज्ञानी समाज होने के कारण गाँव के लोगों में यह भावना अत्यंत तीव्र रूप में पाई जाती है। हिमांशु जोशी जी ने गाँव के लोगों की विशेषता को दिखाया है।

4.7.2 अज्ञान / अशिक्षा समस्या -

आधुनिक काल में शिक्षा का इतना प्रचार और प्रसार हो जाने के बावजूद भी इस देश में कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ शिक्षा पूरी तरह प्रसार नहीं पा सकी है। जैसे पहाड़ों के बीच में होनेवाली लोहारों की वह बस्ती जिसे हिमांशु जोशी जी ने अत्यंत सुंदर ढंग से चित्रित किया है। अज्ञान या अशिक्षा के कारण कुछ बातों में उन पर जबरदस्ती हो रही है, बिना वजह उन्हें तंग किया जा रहा है, इस बात का पता भी उन्हें नहीं चल सकता है। उन्हें तो यह भी नहीं मालूम कि चिठ्ठी कैसे लिखवाई जाती है। जब गोमती अपने देवर को थोकदार से चिठ्ठी लिखवाती है तो पहले कुसल-बात लिखनी है ऐसा कहती है, लेकिन बाद में अपने ऊपर होनेवाले अन्याय को अंकित करती है। पहले लिखवाई चिठ्ठी का जिक्र भी करती है। उन्हें आने के लिए कहती है, छोटी-सी-छोटी बात को भी लिखवा देती है। यहाँ उसका अज्ञान साफ झलक जाता है। जब थोकदार उससे पूछते हैं कि, और क्या लिखूँ ? तो वह कहती है कि सब लिख दो, जैसे थोकदार जानता ही है कि वह क्या लिखवाना चाहती है।

जब उसका देवर आता है और गोमती के पति पिरमा को कलिय`का के द्वारा पीटते देखता है तो वह उन्हें छुड़ाकर घर ले आता है लेकिन वह जानता है कि अपने भाई को गांजा पिला-पिलाकर इन लोगों ने खराब कर दिया है। वह अपनी भाभी से पूछता है कि,

''बोज्यू, ठूल`दा का इलाज किया या नहीं ?'' तो वह जवाब देती है ''क्यों नहीं ? सब कुछ करवाया देवर ज्यू: झाड-फूँक किया, दवाई-पताई की। घोड़िया डाक्टर का भी इलाज चला.......।''[12]

अर्थात् वह तो इतनी अज्ञानी है कि वह तो इतना भी नहीं जानती की घोड़िया डाक्टर तो जानवरों का इलाज करता है, आदमियों का नहीं। गाँव के लोगों में कुछ अज्ञानी ऐसे भी है जिनका फायदा कलिय`का जैसे लोग उठाते हैं। जब देवराम सभी के पास जाकर कलिय`का की बुराई कर आता है तो वे लोग कलिय`का को पूछने लगते हैं। जब पधान उसे पूछते हैं कि तुम पागल पिरमा से काम क्यों करवाते हो ? तो वह बौखला उठता है और कहता है -

''तुम भी पधान, जाने बिना ही कह देते हो। तुम को पता भी है कि पिरमा की माँ के

किरिया-करम का खर्चा किसने किया ? अपना सीना ठोकते हुए कलिय'का ने कहा 'कर्जा लेकर पापिन पर कफन मैंने डाला था, मैंने ! उसे चुकाने को तो कोई नहीं कहता। यदि ब्याज के रूप में थोड़ा बहुत काम कभी करवा लेता हूँ तो सब की आँखों में चुभता है।''[13]

अर्थात् झूठा कारण दिखलाकर कलिय'का पिरमा को पीसता रहता है। इस प्रकार हम यह देखते हैं कि हिमांशु जोशी जी ने न सिर्फ गाँव के लोगों के अज्ञान को प्रस्तुत किया है बल्कि उसके होनेवाले भयावह परिणामों को भी अंकित किया है। जैसे अंधश्रद्धा, शोषण आदि समस्याएँ इसी अज्ञान के फलस्वरूप निर्माण हो जाती हैं।

4.7.3 अन्याय / अत्याचार -

गाँव के लोगों के अज्ञान के कारण तरह-तरह के अत्याचार उन पर होते रहते हैं। हर कोई अपनी तरफ से अज्ञानी का शोषण करता है। हर कोई अपनी तरफ से अत्याचार भी करते हैं। इसी कारण ही गोमती के पति पिरमा को चोरी के इल्जाम में पकड़कर ले जाते हैं क्योंकि कलिय'का ने उसी पर इल्जाम लगाया होता है लेकिन उसके पिता के समान होनेवाले खिमु'का इस अत्याचार का प्रतिकार करता है। वह कहता है कि,

''सत्यानास हो इस कलिय का ! चोरी किसी ने की और सजा कोई भुगते ? अपने तेजुआ के बदले इस सुँअर की औलाद ने बेचारे पिरमा को हौलात भिजवा दिया।''[14]

जब खिमु'का और बोलने लगते हैं तो कलिया और तेजुआ दोनों मिलकर खिमु'का को पीटते हैं। इतना ही नहीं बाद में अपने तन को दाँव पर लगाकर जब गोमती अपने पागल पति को वापस छुड़ा लाती है तो फिर एक दिन छोटिशी गलती के कारण वे उस पर लाठियाँ बरसाने लगते हैं। वे तो उसे मार-मार कर वहीं पर उसे गाड़ देना चाहते हैं। वे तो उसे बेरहमी से पीटते हैं और गालियाँ भी देते हैं। इस अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने की अगर कोई कोशिश भी करता है तो, उसे भी चुप कराया जाता है। वह भी ऐसे, जैसे उस पर कोई अहसान किया गया हो। उस अत्याचार का न तो मुकाबला करने की ताकद उनमें हैं और न सहने की। इसी कारण निरंतर ये चुपचाप अन्याय को सह लेते हैं क्योंकि प्रतिरोध का कोई

फायदा नहीं, ये बात भी वे जान चुके हैं।

दूसरी बात यह है कि, बिना मार-पीट के किसी से सच उगलवाया जाता है, इस बात पर पुलिस को विश्वास नहीं होता। गाँव में तो पुलिस का अन्याय, अत्याचार और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि वहाँ के लोग अधिक मात्रा में अज्ञानी होने के कारण वर्दी से भी डरते हैं। उनके अज्ञान का फायदा आसानी से उठाया जाता है। गाँव में आनेवाली पुलिस, पटवारी, पेशकार पूरी तरह से इस बात का फायदा उठाते हैं। किसी भी कारण वे आये हो, जितने दिन वे रहते हैं उतने दिन उनके खाने, पीने का प्रबंध गाँववालों को ही करना पड़ता है। फिर पूछ-ताछ के नाम पर मार-पीट भी चलती है। जब कोई सुराग पुरुषों से नहीं मिलता तो औरतों पर जुलूम जबरदस्ती शुरू हो जाती है। इनमें कुछ स्त्रियों की इज्जत भी लूट ली जाती है, जैसे गोमती की माँ की ननद की आत्महत्या के मामले में होता है और जाते वक्त भी वह इस तरह जाता है जैसे अहसान जता रहा हो। पेशकार के चले जाने पर पटवारी भी इसी पूछ-ताछ के बहाने स्त्रियों को रात को बुलाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर पुलिस लोगों पर अत्याचार करती रहती हैं।

इस प्रकार सामाजिक जीवन के अनेकानेक पहलुओं को हिमांशु जोशी जी ने अपने उपन्यास में दिखाया है। पूरी सामाजिक पृष्ठभूमि ही इससे हमारे आँखों के सामने प्रस्तुत हो जाती है।

4.7.4 स्वार्थी प्रवृत्ति -

मनुष्य का स्वार्थ मनुष्य से क्या नहीं करवाता ? अपनें स्वार्थ के लिए कुछ भी करने के लिए मनुष्य तैयार रहता है। हिमांशु जोशी जी के 'कगार की आग' उपन्यास में चित्रित लधौंन गाँव के पास होनेवाले जंगल में लींसे से भरे हुए कनस्तरों की चोरी हो जाती है। तब पिरमा को पकड़कर ले जाते हैं। वह मार-पीट के भय से इल्जाम को स्वीकार कर लेता है। थोड़ी-बहुत सजा भुगतकर वापस आ जाता है। जंगल में छिपकर शराब बनानेवाले भी उसे साथ ले जाते हैं, गांजा पिलाते, खाना खिलाते, ताकि छापा पड़ने पर उसे आगे किया जा सके। जब कनस्तरों की चोरी हो जाती है तो गलती तेजुआ करता है लेकिन पिरमा को ही पकड़कर ले जाते हैं।

कलिय'का तो हर एक चीज से अपना स्वार्थ ही साधते हैं। जब गोमती नरसिंह डाँडे के खुशाल के घर रहने लगती है तो कलिय'का को चैन नहीं आता। उसका वर्णन हिमांशु जोशी जी ने इसप्रकार

किया है -

''कलिय'का की सारी जिंदगी 'कूटनीति' में ही बीती थी। कब कौनसी तुरप चाल चलनी है, भली-भाँति जानते थे। खुशाल के घर गोमती यों ही बैठ जाए, उन्हें कब स्वीकार होता।''[15]

वहाँ जाकर कलिय'का घड़ी भरने की रकम के रूप में चार सौं रूपए लेकर आते हैं।

इस उपन्यास में ऐसे कई पात्र हैं जो अपने स्वार्थ के लिए गोमती का शोषण करते हैं। कलिय'का, तेजुआ इन दोनों के अलावा लाला तिरपनलाल, पटवारी, पेशकार सभी उसका फायदा उठाते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वार्थ साधने की मनुष्य की प्रवृत्ति के कारण किसी को कष्ट हो रहा है, यह कोई नहीं देखता। अपना घर भरने के लिए सभी तैयार रहते हैं। चाहे खुशाल लोहार उसे चार सौ रूपए के एवज में रखता है परंतु फिर भी जब गोमती अपने पति पिरमा और बच्चे कन्नु की याद निकालती है तो उसे गुस्सा आता है और वह उसके लिए दिए पैसों की बात कहकर उसका अपमान भी करता है। अर्थात् यहाँ भी उसका स्वार्थ ही दिखाई देता है। वह जिस बच्चे के कारण मर भी नहीं सकती, उस बच्चे का नाम भी निकालना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। इस प्रकार स्वार्थ को स्पष्टता से दर्शाया है।

4.7.5 व्यसनाधिनता की समस्या -

'कगार की आग' उपन्यास में विभिन्न पात्र दिखाई देते हैं। जिसमें कलिया, तेजुआ, पिरमा आदि आते है। कलिया और तेजुआ अत्तर शुल्फई, शराब पीते हैं। पिरमा को पहले जबरदस्ती से लिए जाते हैं। वह गाँजा, शराब पीता है। कलिया और तेजुआ उसे गांजा पिला-पिलाकर उसकी हालत बिगाड़ते हैं। उससे अनेक काम करवाते हैं। गोमती इस व्यसनाधीनता के कारण परेशान है क्योंकि पिरमा को इन व्यसनों की इतनी आदत पड़ गई है कि उसके बीना वह जीवित रह नहीं सकता। सभी व्यसनों की आदत पड़ने के कारण, आर्थिक विपन्नावस्था के कारण कलिय'का की बात को ही मानता है। अपने पर होनेवाले अत्याचारों का विरोध भी नहीं करता। इस प्रकार व्यसनाधीनता के भयावह परिणामों को दिखाने में जोशी जी सफल हुए हैं।

4.7.6 विवाह समस्या -

नारी का वैसे तो प्राचीन काल से शोषण चल रहा है परंतु आम तौर पर नारी शोषण के पीछे नारी का अज्ञान सबसे महत्त्वपूर्ण कारण है। नारी का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक आदि कई तरह से शोषण होता आया है। नारी की प्राकृतिक दुर्बलता का फायदा उठाने की वृत्ति ही पुरुषों में अधिक होती है। उसका शारीरिक शोषण ही अधिक रहता है। 'कगार की आग' में भी ऐसा कई बार वर्णन आया है जहाँ नारी पुरुष की वासना का शिकार बन गई है। स्त्री अपने परिवार के सुख के लिए क्या-क्या नहीं करती लेकिन एक ओर पुरुष ही उसे बरबाद करता है। अपने स्वार्थ के लिए उसका प्रयोग करता है। अपनी हवस मिटाता है और वहीं उसके चरित्र पर लांछन लगाता है। इसी क्रूर यथार्थ को जोशी जी ने चित्रित किया है। वैवाहिक समस्याओं को हम निम्न प्रकार से विभाजित कर सकते हैं -

4.7.6.1 विधवा विवाह समस्या -

प्राचीन काल से हमारे देश में यह समस्या दिखाई देती है। हिमांशु जोशी जी ने तो इस समस्या के विदारक रूप को प्रस्तुत किया है। इस पहाड़ी अंचल में लड़की की शादी बहुत ही छोटी उम्र में करने का रिवाज है। इसी कारण किसी अलहड़ बालिका का विवाह उससे काफी बड़े व्यक्ति के साथ कर दिया जाता है। अगर उसके पति का देहांत हो भी जाए तो सारा दोष उस बेचारी कन्या पर आता है। जब गोमती के पहले पति का देहांत हो जाता है तो उस पर भी इसी प्रकार का दोषारोप होता है। चाहें औरतें सहानुभूति जतलाती हुई कहती हो कि वह पैदा ही खोटे करम लेकर हुई है; बेचारी ! दो-तीन साल की थी तब बाप गुजर गया। बारह-तेरह की कच्ची उम्र में ही वह विधवा हो गई। उन सभी का उसके पीछे दयाभाव नहीं था। ये सभी उससे सहानुभूति जताती है लेकिन पीठ-पीछे निंदा भी करती है। झगड़े में कलिय'का भी कहता है कि एक खसम खा चुकी है, या फिर वह खुशाल के साथ रहने लगती है तो उसे बार-बार यही बात सुननी पड़ती है कि वह अब नया खसम खोज रही है। अर्थात् उसकी गलती उसके विधवा होने में न होते हुए भी उस पर उसी बात के लिए बार-बार ताने दिए जाते हैं। गोमती की माँ की विधवा ननद भी जब आत्महत्या कर लेती है तो इस बात का फायदा उठाते हुए गोमती की माँ का उपभोग पटवारी और पेशकार ले लेते हैं। उसकी ननद की स्थिति को गोमती की माँ इस प्रकार प्रस्तुत करती है कि -

''ननद खुबानी की डाल पर रस्सी बाँधकर आत्महत्या करती है। ससुराल में उसे दुख था।

यहाँ मैकेवाले अपने घर टिकने नहीं देते थे। बेचारी विधवा थी। पेट में किसी का बच्चा रह गया था। लोक-लाज के भय से मुक्ति पाने के लिए यह रास्ता अपना लिया था।''[16]

उसकी इस आत्महत्या का फायदा उठाते हुए पेशकार और पटवारी ने गाँववालों से खर्चा लिया, औरतों की इज्जतें लूटी। अर्थात् अपने दुख के कारण वह तो मर गई परंतु उसका बहुत बड़ा दंड गाँववालों को चुकाना पड़ा।

इस उपन्यास में देवराम विधूर का भी चित्रण किया गया है। उसकी पत्नी गुजर जाने के बाद वह ब्याह नहीं कर पाता। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और फौज की नौकरी के कारण वह शादी नहीं कर पाता और जब वह करना चाहता है तो परिवार की हालत उसे रूकने पर मजबूर करती है। फिर अंत में तो युद्ध में उसकी मौत हो जाती है। बार-बार गोमती उसे शादी करने की सलाह देती थी परंतु वह टाल देता था।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि हिमांशु जोशी जी ने अपने उपन्यास में विधवाओं की दर्दनाक स्थिति का वर्णन किया है। विधवा नारी समाज की उपेक्षिता नारी है। इस यथार्थ को हिमांशु जोशी जी ने अंकित किया है।

4.7.6.2 अनमेल विवाह -

प्राचीन काल में हमारे देश में बाल-विवाह प्रथा थी। लड़की की शादी दस-बारहवें साल में कर दी जाती थी। इसी कारण उन पर बहुत छोटी-सी उम्र में ही सारी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ आ जाती थी। 'कगार की आग' उपन्यास की नायिका भी इसी तरह बाल विवाह हुई लड़की है। उसका पति उससे उम्र में बड़ा था। बाल्यकाल में ही विधवा हो जाने के कारण उसका पागल पिरमा से विवाह होता है। गोमती की माँ की भी यही स्थिति थी। इस प्रकार यहाँ बालविवाह के साथ-साथ अनमेल विवाह की समस्या भी दिखाई देती है।

4.7.6.3 बहु विवाह समस्या -

इस उप यास में संतान प्राप्ति हेतु बहु विवाह किया हुआ मिलता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार अंत में पा ा गरने के लिए बेटे की जरूरत पड़ती है। तो उसकी पूर्ति के लिए दो शादियाँ होने के

बावजूद भी उपन्यास का पात्र खुशालराम गोमती को अपनी तीसरी पत्नी के रूप में रखता है। वह उससे संतान की अपेक्षा करता है। उसकी दो सौंते उसका हमेशा द्वेष करती हैं जिससे वह परेशान रहती है। उसके खिलाफ खुशाल को भड़काती है। गोमती को मार पड़ती है और वे दोनों उसके गहने और चाबियाँ छीन लेती हैं। इस प्रकार समाज में विवाह संबंध में होनेवाली समस्याओं को स्पष्ट रूप से दर्शाया है।

4.7.6.4 दहेज समस्या -

'कगार की आग' उपन्यास में दहेज समस्या का जिक्र नहीं मिलता है। खुशाल जब गोमती को अपने पास रखना चाहता है तो कलिय तथा तेजुआ उसे लेने आते हैं तो पंचों के सामने खुशाल चार सौ रूपए धड़ी भरता है और गोमती को अपनी रखैल के रूप में रखता है। इसी बात को दहेज समस्या के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता है। ये बात उस समस्या से कुछ अंशों से संबंधित जरूर है।

4.7.6.5 अंतर्जातीय विवाह समस्या -

इस उपन्यास का पात्र गोमती की शादी जाति-बिरादरी वाले से ही होती है। मगर उसका आर्थिक विपन्नावस्था तथा अन्याय अत्याचार के कारण उसकी मजबूरी से सेठ, साहूकारों से तथा पेशकार पटवारी से संबंध आता है। अत: हम कह सकते हैं कि, इससे आंतर्जातीय संबंध दिखाई देता है। विवाह से उसका कोई संबंध नहीं है। इससे यह ज्ञात होता है कि इस उपन्यास में आंतर्जातीय विवाह का भी उल्लेख नहीं मिलता है।

4.7.7 परिवार-विघटन की समस्या -

आज भी देश के कुछ भागों में बड़े परिवार दिखाई देते हैं। इस सम्मिलित परिवार में आपसी भाईचारा अगर हो तो सारा काम ठीक हो जाता है, परंतु अगर भाइयों में झगड़ा है तो कहीं-न-कहीं किसी एक व्यक्ति पर जुलूम जबरदस्ती की ही जाती है। कोई-न-कोई इस पारिवारिक शोषण को सह ही लेता है। जब सहनशक्ति का अंत हो जाता है, तब परिवार-विघटन हो जाता है। हिमांशु जोशी ग्रामीण जीवन की इस वास्तविकता से पूरी तरह परिचित हैं। उन्होंने कलिय'का और पिरमा के माध्यम से इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। कलिय'का गोमती को बुरी नजर से देखते हैं यह बात जब वह अपने पति को बताती है तो वह उसे बावली कहकर चुप करा देता है। वह जानती है कि कक्का बैल की तरह पिरमा को जोते

रहे हैं। जब तक वे सब एक परिवार में रहे तब तक कभी भी उन्हें भरपेट खाना नहीं दिया। रूखा-सूखा, टूटी-फूटी थाली में फेंक देते थे। पहनने के लिए पिरमा को तेजुआ के उतारे चीथड़े देते थे और दिन-रात मेहनत करवाते थे। अलग हो जाने पर भी अपनी बहू पर बुरी नजर रखते हैं।

चाहे ऐसा माना जाता रहा हो कि परिवार विभाजन की समस्या औद्योगीकरण से शुरू हो गई परंतु फिर भी परिवारों में आपसी झगड़ो के कारण होनेवाला परिवार विभाजन तो सदियों से चला आ रहा है। ऐसी स्थिति में भी विभाजन के समय भी अन्याय हो जाता है, कुछ चीजें गोल-मोल कर दी जाती है। अगर कोई गऊ है तो उसका फायदा उठाकर चीजे हड़प भी कर ली जाती है। इसी प्रकार के स्वार्थी व्यक्ति कलिय'का रहे हैं। कलिय'का और पिरमा के खेतों का बँटवारा जब हो जाता है तो वे सारी चीजें हड़प कर जाते हैं। देवराम मन-ही-मन सोचता है कि,

''कका को भी समझाना होगा कि इन बिचारों पर हाथ न उठाएँ। जब घर के हिस्से हो गए, जमीन भी बँट गई तो फिर इन्हें अपनी बेगारं में क्यों लगाते हो ? बँटवारे के समय आपने क्या दिया इन्हें ? खाने-पकाने के लिए भाँडे-बरतन भी पूरे नहीं।''[17]

अर्थात् विभाजन हो जाने के पश्चात् भी बिना वजह कलिय'का इन्हें तंग करते हैं। सिर्फ तंग ही नहीं करते बल्कि उनसे बेगार में काम करवा लेने के साथ-साथ पीटते भी हैं। अज्ञान के कारण इस परिवार-विभाजन के सही अर्थ को भी वे समझ नहीं पाते, इसी कारण निरंतर पीसते रहते हैं। हिमांशु जोशी जी ने परिवार विभाजन की भयानक त्रासदी को यहाँ अंकित किया है।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि हिमांशु जोशी जी हिंदी साहित्य के एक प्रतिष्ठित उपन्यासकार हैं। जिन्होंने 'कगार की आग' नामक उपन्यास में हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय अंचल में बसे 'लधौंन' गाँव की लोहारों की बस्ती का अंकन किया है। इसके माध्यम से उन्होंने उस प्रदेश-विशेष की सभी विशेषताओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया हैं। उन्होंने अपने उपन्यास के कथानक का आधार वहीं आँचलिक प्रदेश, विशेष रूप में लिया है जिसमें भौगोलिक परिवेश का पूर्णरूप से अंकन किया है। इस प्रदेश की नदी, प्रकृति सुंदर रूप, वहाँ का समाज, पनचक्की आदि का वर्णन यथार्थ लगता है जो भौगोलिक

परिवेश के अंतर्गत आता है। उनके इस उपन्यास के सारे दृश्य किसी चलचित्र की भाँति दृष्टिगोचर हो जाते हैं। उनका पूरा उपन्यास इसी को केंद्र में रखकर लिखा गया है। भौगोलिक विशेषताओं के साथ-साथ उन्होंने इस क्षेत्र विशेष के सामाजिक जीवन के अनेकानेक पहलुओं को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। आँचलिक उपन्यासों में चित्रित समाज बिखरा हुआ मिलता है तथा उसमें पात्रों की भरमार होती है। इसमें पात्रों की संख्या अधिक रही है। इसी कारण इसमें पूरे समाज का अंकन अत्यंत यथार्थ रूप से उन्होंने किया है। भाषा, संवाद तथा शैली की दृष्टि से यह उपन्यास सफल रहा है। इसमें आँचलिक भाषा का अधिक मात्रा में प्रयोग मिलता है। साथ-साथ शब्दों के अनेक प्रकार भी मिलते हैं, जैसे -जुड़े शब्द, 'कर' प्रत्यय लगाकर आये शब्द, द्विरूक्ति शब्द और आँचलिक शब्द आदि। शब्दों के साथ-साथ उन्होंने छोटे-छोटे संवादों से वर्णनात्मकता का खंडन किया है और वहाँ प्रचलित कहावतें तथा मुहावरें और लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया है। आँचलिक भाषा के अनेक रूप उनके उपन्यास में अंकित हुए हैं। स्थानीय बोली का प्रयोग पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल हुआ है। प्रकृति का सजीव चित्रण करने के लिए कई जगहों पर प्रकृति का मानवीकरण किया है। उस आँचलिक प्रदेश में प्रचलित अपशब्दों को भी उन्होंने छोड़ा नहीं है। इससे यह उपन्यास भाषा की दृष्टि से सफल है। आँचलिक वातावरण को स्पष्ट करते समय वहाँ की क्षेत्र विशेष की पृष्ठभूमियों का चित्रण किया है जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियाँ सम्मिलित हैं। राजनीतिक वातावरण उनके उपन्यास में उतना अंकित नहीं हुआ है, परंतु आर्थिक विपन्नावस्था यथार्थ रूप से प्रस्तुत हुई है। धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो सिर्फ अंधविश्वास, भूत-प्रेत और भगवान की कसम खाना आदि के लिए धार्मिकता का आधार लिया गया है। लोकसंस्कृति के अंतर्गत लोकसंस्कृति के सभी अंगों का प्रयोग तो हिमांशु जोशी जी ने नहीं किया है लेकिन लोकसंस्कृति के महत्त्वपूर्ण अंग मेलों का वर्णन उन्होंने किया हैं। जिसमें सिर्फ लोकगीत और लोकनृत्य का जिक्र नहीं आया है। यह हिमांशु जोशी की कमी महसूस होती है। युगीन पृष्ठभूमि, युगीन चेतना की अभिव्यक्ति इस उपन्यास में अत्यल्प मात्रा में हुई है। परंतु काल का पता चल ही जाता है। इस उपन्यास के लगभग सभी पात्र आँचलिक पात्रों के प्रतिनिधि बनकर आते हैं। इन पात्रों के माध्यम से उन्होंने प्राकृतिक स्थिति के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का वर्णन किया है। इसके अंतर्गत वर्ग तथा जातिभावना, विवाह-समस्या, अज्ञान / अशिक्षा की समस्या, परिवार-विघटन की समस्या, अन्याय / अत्याचार, स्वार्थी प्रवृत्ति, व्यसनाधीनता आदि अनेक समस्याओं को उजागर किया है।

अत: हम यह देखते हैं कि हिमांशु जोशी जी का 'कगार की आग' उपन्यास आँचलिक

उपन्यासों के तत्त्वों पर पूरी तरह से खरा उतरता है। कुछ कमियाँ होने पर भी यह एक सफल आँचलिक उपन्यास है।

: संदर्भ-संकेत :

(1) हिमांशु जोशी - कगार की आग - मुखपृष्ठ।

(2) वही ,भूमिका से

(3) वही, पृष्ठ, 21

(4) वही, पृष्ठ, 62.

(5) वही, पृष्ठ, 72.

(6) रामचंद्र तिवारी - हिंदी का गद्य साहित्य - पृ.181.

(7) हिमांशु जोशी - कगार की आग - पृ.24.

(8) वही, पृष्ठ, 69.

(9) वही, पृष्ठ, 53.

(10) वही, पृष्ठ, 105.

(11) वही, पृष्ठ, 63.

(12) वही, पृष्ठ, 45.

(13) वही, पृष्ठ, 50.

(14) वही, पृष्ठ, 22.

(15) वही, पृष्ठ, 57.

(16) वही, पृष्ठ, 37.

(17) वही, पृष्ठ, 47.

****